स्कूल का पुस्तकालय : भाषा शिक्षण के लिए एक मूल्यवान संसाधन

ऊषा मुकुन्दा

स्कूल के पुस्तकालय को पारम्परिक रूप से स्कूली पाठ्यक्रम के अनुकूल और उसको सहयोग देने वाले संसाधन के रूप में देखा जाता है। अतः व्यापक व कुशलता से चुनी गई सामग्री का संग्रह बनाए रखने के अलावा, पुस्तकाध्यक्ष का यह भी दायित्व होता है कि वह शिक्षकों व विद्यार्थियों को पुस्तकालय में उपलब्ध प्रासंगिक और उपयोगी स्रोतों के बारे में सचेत व सूचित करता रहे। मैं पुस्तकालय की भूमिका में एक महत्त्वपूर्ण आयाम और जोड़ना चाहूँगी। पुस्तकालय वास्तव में सक्रिय पहल करते हुए पाठ्यक्रम को समृद्ध बनानेवाली गतिविधियों और कार्यक्रमों की शुरुआत करे। पुस्तकालय के इस तरह से काम करने के लिए कुछ पूर्व शर्तें हैं :

1. प्रबुद्ध और सक्रिय पहल करने वाला प्रबन्धन हो।
2. उपयोगकर्ताओं के प्रति दोस्ताना रुख रखने वाला और ऊर्जावान पुस्तकालयाध्यक्ष हो।
3. सक्रिय व खुली मानसिकता वाला शिक्षक समूह हो।
4. जीवन्त और दिलचस्पी लेने वाले विद्यार्थी हों।

इन सभी के एक सामंजस्यपूर्ण समूह के रूप में काम करने से ही वह उपलब्धि सामने आएगी जिसे मैं मुक्त पुस्तकालय कहती हूँ। इनमें से कोई भी दूसरों से एकदम अलग-थलग नहीं है। इनमें से किसी एक की जीवन्त उपस्थिति भी अन्य तीन में बदलाव ला सकती है। बाकी तो फिर ऐसे पुस्तकालय को कारगर बनाने के लिए पूरी ऊर्जा और इच्छाशक्ति लगा देने पर निर्भर करेगा।

आइए अब इस बात की पड़ताल करें कि स्कूलों में भाषा शिक्षण के विकास में और उसको बेहतर बनाने में पुस्तकालय अपनी भूमिका किस तरह निभाते हैं।

भाषा भले ही एक व्यावहारिक औज़ार की तरह शुरू हुई हो पर समय के साथ यह हर प्रकार की अभिव्यक्ति के लिए संरचनात्मक रूप से समृद्ध व परिष्कृत व्यवस्था के रूप में विकसित हो गई है। यह न केवल विचारों को एक-दूसरे तक पहुँचाने का माध्यम है बल्कि यह हमें सोचने, चिन्तन करने और प्रत्युत्तर देने के लिए प्रेरित करती और सक्षम बनाती है। यह हमें संस्कृति, आदतों और सामाजिक मानकों को समझने के लिए एक झरोखा देती है और विभिन्न

समुदायों में उभरती प्रवृत्तियों का आईना होती है। किसी भी भाषा को जीवन्त होने के लिए उसका सुनाई देना, बोला जाना, पढ़ा जाना और लिखा जाना ज़रूरी है। इन सबको जो सूत्र एक साथ पिरोये रखता है, वह है भाषा का आशय समझने, सराहने और आनन्द लेने की क्षमता व विभिन्न स्तरों पर उसके इस्तेमाल करने की सुविधा।

सभी की बातें सुनें और अपनी बातें न थोपें

संसाधन की तरह एक सशक्त संग्रह रखने के अलावा पुस्तकालयाध्यक्ष को प्रत्येक कक्षा के बच्चों के साथ हफ़्ते में कम-से-कम एक बार पुस्तकालय के घण्टे में ज़रूर मिलना चाहिए। इस समय का इस्तेमाल भाषा सीखने की कई नई गतिविधियों को शुरू करने में किया जा सकता है।

कहानी सुनाना और ज़ोर से पढ़ना, सुनने की सबसे लोकप्रिय गतिविधियाँ हैं। इसे एक मूल्यवान अनुभव बनाने के लिए पठन सामग्री का विवेकपूर्ण चयन बहुत ज़रूरी है।

1. पौराणिक कथाओं और किंवदन्तियों को छोटे बच्चों के बीच ज़ोर से पढ़ना उनके लिए अनमोल होता है। इसमें बच्चे एक संस्कृति के इतिहास, परम्परा और प्राकृतिक सम्पदा को प्रतिबिम्बित करने वाली भाषा के सम्पर्क में आते हैं।
2. प्रत्येक भाषा की लोकप्रिय पारम्परिक कहानियाँ बच्चों में कथा को सराहने की क्षमता की और बड़े हो जाने पर उनके आगे के अध्ययन की नींव रख सकती हैं।
3. पहले छोटी कहानियों को पढ़कर सुनाया जाता है; और फिर पूरे सत्र में धीरे-धीरे बढ़ते हुए बड़ी कहानियों की तरफ पहुँचते हैं। इससे बच्चों को इनमें से प्रत्येक विधाओं के लिए भाषा के विविध उपयोगों की जानकारी मिलती है। एक लेखक का कौशल भाषा को किफ़ायती व प्रभावशाली ढंग से इस्तेमाल करने में निहित होने के अलावा, इस बात में होता है कि वह भाषा की सरसता व उसकी बारीकियों को प्रगट करते हुए लम्बे विवरणों में खुद को कितने सन्तुलन से व्यक्त कर सकता है।
4. अलग-अलग विषयों वाली कहानियाँ सुनाए जाने से बच्चों को भाषा की वर्णनात्मक, विवरणात्मक या संवादात्मक शैलियों से परिचित होने का मौका मिलता है।
5. कविता की भाषा को सुनना छोटे बच्चों के लिए भाषा से परिचित होने का सबसे अच्छा तरीक़ा है। बच्चे धीरे-धीरे यह देख पाते हैं कि भाषा कैसे, कभी-कभी उछलकूद कर सकती है, और कभी-कभी चिन्तनशील और बेहद निजी हो सकती है।
6. बच्चों को पढ़कर सुनाने की प्रक्रिया में अक्सर कथा के अलावा दूसरे प्रकार के साहित्य को भुला दिया जाता है। पर वह भी एक सशक्त उपकरण है जहाँ भाषा का उपयोग जानकारी देने, चर्चा करने, तर्क करने, समझाने-बुझाने, प्रेरित करने और यहाँ तक कि हँसाने के लिए भी हो सकता है।
7.

बच्चों को ज़ोर से पढ़कर सुनाने के इन सभी उदाहरणों को बड़ी कक्षाओं तक भी चलाया जा सकता है। इस ढंग से भाषा का सीखना धारदार व गहरा होता जाता है जिससे वे भाषा-शिक्षा की अन्य ज़रूरतों - बोलना, पढ़ना और लिखना - के लिए भी तैयार होते हैं।

बोलना अभी सीखें अन्यथा हमेशा के लिए अपनी जीभ को आराम ही करने दें!

भाषा सीखना तब सबसे ज़्यादा मज़ेदार होता है जब जीभ को उन्मुक्त कर दिया जाता है।

1. भाषा का कूटसंकेत बनाने के उपकरण के रूप में प्रयोग करके पुस्तकालय में ख़जाने की तलाश की जा सकती है, जिसमें पहले पुस्तकालयाध्यक्ष संकेतों को तय करता है, और फिर बच्चे इस चुनौती को हाथ में लेते हैं।
2. बस एक मिनिट - बोलने का एक खेल, जिसमें दिए गए किसी विषय पर एक मिनिट की तैयारी के बाद समझदारी से, व्याकरण सम्मत ढंग से, और संगत तरीके से बोलना पड़ता है। इससे भाषा के दुरुपयोगों के बारे में हास्यप्रद ज्ञान प्राप्त होता है।
3. पुस्तक नीलामियों में, जहाँ बच्चों का एक समूह अन्य समूहों को पढ़ने के लिए कोई किताब 'बेचता' है, भाषा प्रवाहमय होनी चाहिए और उसमें सामने वाले को प्रभावित करने की ताक़त होनी चाहिए।
4. बोलने के इन खेलों के अलावा पुस्तक चर्चा की गतिविधि का उपयोग भी किया गया है। यह प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा सत्र में कम-से-कम एक बार ज़रूर किया जाता है। यह विद्यार्थी के द्वारा पढ़ी हुई किसी किताब के बारे में एक प्रस्तुतिकरण होता है। इसमें (कहानी के) विषय, कथानक, चरित्र चित्रण, भाषा और शैली के साथ-साथ व्यक्तिगत प्रतिक्रिया भी शामिल रहती है। किताब के किसी उद्धरण को भी श्रोताओं के सामने ज़ोर से पढ़ा जाता है जिससे उन्हें उसकी भाषा का सीधा स्वाद मिलता है। इस प्रस्तुतिकरण के बाद इतना ही महत्त्वपूर्ण एक अन्य पक्ष सामने आता है - अन्य बच्चों व पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा उस बच्चे से सवाल पूछे जाना, जो इस प्रक्रिया में लिखे हुए शब्दों में छिपे बारीक भावों को प्रगट कर सकते हैं।
5. बड़ी कक्षा में पहुँचने पर बच्चों को सत्र में अपनी पसन्द के किसी विषय पर लघु-परिचर्चा (मिनी-सेमिनार) प्रस्तुत करना होगी। इसके लिए भाषा के उपयोग में स्पष्टता, सम्बद्धता और थोड़े परिष्कार की ज़रूरत होती है।
6. बच्चों को स्कूल के लिए किताबों का चयन करने हेतु किताबों की दुकानों व पुस्तक मेलों में ले जाया जाता है। इसके बाद, वे स्कूल की सभा में किताब के बारे में तथा किताब को पुस्तकालय के लिए चुनने की वजहों के बारे में कुछ शब्द बोलते हैं।
7. कभी-कभी, कोई कक्षा या फिर कोई अकेला विद्यार्थी स्कूल की प्रार्थना-सभाओं में कविताओं का पाठ करने के लिए उन्हें पुस्तकालय से चुनता है।
8. पुस्तकालय की एक अन्य लोकप्रिय गतिविधि है नाटक का वाचन। एक समूह किसी नाटक का चयन करता है, सबको अलग-अलग भूमिकाएँ दे दी जाती हैं, और बस वे लोग शुरू हो जाते हैं। ऑस्कर वाइल्ड, प्रेमचन्द, विलियम शेक्सपियर, बर्नाड शॉ, गिरीश कर्नाड, टॉम स्टॉपर्ड

और कई अन्य नाटककारों ने स्कूल में भाषा की पढ़ाई को बहुत समृद्ध किया है, काश उन्हें यह पता होता!

(कुछ) किताबों का प्रकाशन भले ही बन्द हो जाए लेकिन कुछ किताबें हमारे ऊपर अमिट छाप छोड़ जाती हैं।

सावधान...! वह बहुत ज़्यादा पढ़ता है

पुस्तकालय के संग्रह का पूरा विस्तार विद्यार्थियों व शिक्षकों को उनकी पढ़ने की यात्राओं हेतु उपलब्ध रहता है। यह लेखन की विभिन्न विधाओं के बारे में विद्यार्थियों पर कुछ थोपे बिना सहज रूप से उनका मार्गदर्शन करने का अवसर प्रदान करता है। यहाँ कहानियों, उपन्यासों, नाटक और कविताओं, निबन्ध और जीवनियों, यात्रा-पुस्तकों कालजयी साहित्य, आधुनिक रचनाओं, और लोकप्रिय विज्ञान पुस्तकों को पढ़ा जा सकता है, उनकी समीक्षा की जा सकती है और उन पर चर्चा की जा सकती है ताकि विद्यार्थी भाषा की सभी सम्भव भावाभिव्यक्तियों से अवगत हो सकें।

1. उन्हें चिन्तन की भाषा उपलब्ध हो जाती है जब वे डायरियाँ, जर्नल, यात्रा वृत्तान्त और आत्मकथाएँ पढ़ते हैं।
2. वे विचारों की भाषा से अवगत होते हैं जब वे दर्शन, शिक्षा, वैज्ञानिक या आर्थिक सिद्धान्तों और ऐतिहासिक विचारों पर लिखी गई किताबें पढ़ते हैं।
3. एक बहुत महत्त्वपूर्ण पहलू है अनूदित कृतियों का अध्ययन। इसमें पाठकों को विभिन्न भाषाओं की बारीकियों व जटिलताओं के बारे में जानने को मिलता है और यह ज्ञात होता है कि किस तरह से एक भाषा के अर्थ उसको बोलने वाले लोगों के नैतिक बोध से जुड़े हुए होते हैं। जब विद्यार्थी ऐतिहासिक स्रोतों और वैज्ञानिक कथासाहित्य (साइंस फिक्शन) के माध्यम से दूसरी संस्कृतियों और भौगोलिक क्षेत्रों की कहानियाँ पढ़ते हैं तो यह अनुभव लोगों के बीच के अवरोधों को तोड़ने पहला क़दम साबित हो सकता है।
4. छोटे बच्चों के लिए एक और रोचक अनुभव शब्दकोषों के साथ होता है। इनसे उनको यह जानने को मिलता है कि यह किताब भाषा के बारे में जानकारियों का एक खजाना होती है। किसी शब्द की जड़ें और उसकी उत्पत्ति, अर्थ, उच्चारण, हिज्जे, उपयोग, उसके समध्वनीय पर भिन्नार्थक शब्द, उसकी व्याकरणीय श्रेणी और यहाँ तक कि चलन की दृष्टि से उसकी मौजूदा स्थिति - ये सभी तरह की जानकारियाँ मिलकर, शब्दों की दिलचस्प कहानियाँ बयान करती हैं।

5. पुस्तकालय में अख़बारों, पत्रिकाओं और जर्नलों के वाचन को बहुत प्रोत्साहित किया जाता है। इन प्रारूपों में सामने आने वाली भाषा से विद्यार्थियों को लेखन की विभिन्न शैलियों के बारे में जानने का अवसर मिलता है।
6. ऐसा प्रतीत होता है कि आजकल के बच्चे काफ़ी आसानी से ऑनलाइन पढ़ना और इन्टरनेट की भाषा सीख लेते हैं। पुस्तकालय बच्चों को इस बारे में सचेत कर सकते हैं कि यह भाषा के कई सारे उपयोगों में से एक उपयोग भर है, जबकि पुस्तकालय में उन्हें भाषा के सभी उपयोग देखने को मिल जाएँगे।
7. लेबल, सूचनाएँ, निर्देश, समय-सारणियाँ, नक्शे और टेलीफोन-डायरेक्टरी, जो सभी पुस्तकालय संकलन के हिस्से होते हैं, जिस भाषा का उपयोग करते हैं उसे सीखना भी ज़रूरी है।

क्या ऐसा किसी अनुबन्ध में लिखा है?

आप के मन में यह सवाल उठ सकता है कि भाषायी शिक्षा की लेखन प्रक्रिया में किस तरह पुस्तकालय को शामिल किया जा सकता है?

पुस्तकालय प्रोजेक्ट इसके उत्तर का संकेत देते हैं। हर साल प्रत्येक कक्षा पुस्तकालय के साथ मिलकर एक प्रोजेक्ट हाथ में लेती है। एक समूह सन्दर्भग्रन्थ सूचियाँ तैयार करता है, जबकि एक अन्य समूह शोधकार्य के बाद पुस्तकालय का इतिहास लिखता है। फिर एक दूसरा समूह पुस्तकालय का उपयोग करनेवालों के सर्वेक्षण हेतु प्रश्नावलियाँ तैयार करता है। छोटी-छोटी किताबों के रूप में अलग-अलग कार्यक्षेत्रों में काम करने वालों की जीवनियाँ लिखना भी एक लोकप्रिय गतिविधि रही है। एक मोची, एक बस ड्राइवर और एक पुलिसवाला, ये कुछ ऐसे लोग थे जिनका साक्षात्कार लिया गया और जिनके बारे में लिखा गया। जैसा कि आप देख सकते हैं, इन अभ्यासों में से प्रत्येक में भाषा की बहुत भिन्न-भिन्न शैलियों का उपयोग किया जाता है। प्रोजेक्ट से पूर्व बच्चे सन्दर्भ और पृष्ठभूमि के लिए जो खोजबीन करते हैं उससे वे इन सभी शैलियों के बारे में अचेतन रूप से सीखते जाते हैं। एक अन्य प्रोजेक्ट था पुस्तकालय के बारे में एक लघु वीडियो फिल्म बनाना जिसके लिए उन्हें पटकथा भी खुद ही लिखना थी। लेखन के कुछ अन्य कार्य थे पुस्तक समीक्षाएँ, पुस्तकालय के नियमों की सूची बनाना, दिलचस्प किताबों के बारे में पोस्टर बनाना और नोटिस बोर्ड के लिए कुछ छोटी-छोटी टिप्पणियाँ या सूचनाएँ लिखना।

कुछ आखिरी शब्द और शेष फिर मौन है

पुस्तकालय में जो कुछ चीज़ें हमने की हैं, उनमें से एक है दूसरी भाषाओं की किताबों के उदाहरणों का संकलन करना, भले ही उन्हें स्कूल में पढ़ाया न जाता हो या इस्तेमाल न किया जाता हो। यह बच्चों को यह दिखाने के लिए किया गया कि विभिन्न भाषाएँ किस तरह से लिखी और बोली जा सकती हैं - दाएँ से बाएँ, ऊपर से नीचे, और देखने में क़रीब-क़रीब एक सुन्दर हस्तलिपि के नमूने जैसी।

पुस्तकालय द्वारा द्वितीय भाषा की पुस्तकों को सबसे आगे लाकर प्रयोक्ताओं को एक सशक्त सन्देश प्रेषित किया जा सकता है, भले ही इससे वहाँ की वर्गीकरण योजना का उल्लंघन क्यों न हो जाए। हमने हमारे पुस्तकालय में यह किया है और परिणाम बहुत अच्छे रहे हैं।

"तुम कोई भी हो (भाषा की) दुनिया खुद को तुम्हारी कल्पनाशीलता के सामने पेश करती है। जंगली बतख की भाँति तुम्हें पुकारती है।" - मैरी ऑलिवर

सन्दर्भ :

- उद्धरण: मैरी ऑलिवर की कविताओं से व विलियम शेक्सपियर के नाटकों से।
- उदाहरण सेंटर फॉर लर्निंग, बेंगलूरु के पुस्तकालय के हैं।

ऊषा मुकुन्दा का पिछले 25 सालों से स्कूली पुस्तकालयों के साथ लगातार सम्बन्ध रहा है। उन्होंने द वैली स्कूल, केएफआई में और फिर सेंटर फॉर लर्निंग, बेंगलूरु में मुक्त पुस्तकालय स्थापित किए। उनका मक़सद रहा है पुस्तकालयों के विश्वासपूर्ण उपयोग की स्थिति पैदा करना और साथ ही सभी बच्चों, किशोरों को वाचन में मज़ा दिलाना। यह उन्होंने खेलों, विशेष गतिविधियों, और प्रोजेक्टों के माध्यम से किया है। सेंटर फॉर लर्निंग से निवृत्त होने के बाद वे शहरी और ग्रामीण, दोनों क्षेत्रों के स्कूलों तक मदद का हाथ बढ़ाती रही हैं ताकि इन स्कूलों में मुक्त पुस्तकालयों की स्थापना की जा सके, और अध्ययन को प्रोत्साहित करने के लिए कुछ ख़ास गतिविधियों को शुरू किया जा सके। उनसे usha.mukunda@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

यह *Learning Curve, Issue XIII (Language Learning)* अक्टूबर,2009 में प्रकाशित लेख The School Library : A Rich Resource in Language Education का हिन्दी अनुवाद है।

अनुवाद : भरत त्रिपाठी **पुनरीक्षण एवं सम्पादन :** राजेश उत्साही